महावीर जयन्ति स्मारिका - १९७८ (फोल्डर नं. ०१४०२४)

मुख्य टाइटल

सन्देश

अनुक्रम

आपकी बात हमारी बात

अध्यक्षीय ---------- ३

आत्म-निवेदन ---------- ५

प्रकाशकीय ---------- ६

राजस्थान जैन सभा-संक्षिप्त परिचय ---------- ८

महावीर जयन्ती स्मारिका १९७७ – लोक दृष्टि में

सितारे जो अस्त हो गये

प्रथम खण्ड – महावीर-उनका दर्शन एवं इतर दर्शन

वीर वन्दना ---------- १

महावीर-आत्मक्रांति और जनक्रान्ति के आईने में ---------- २

भगवान महावीर के दर्शन ---------- ३

महावीर व्यक्तित्व-मापन ---------- ९

ज्योतिर्मय तुम्हारी प्रतीक्षा है ---------- १३

ईश्वर-परिकल्पित निरर्थकता ---------- १५

व्यक्ति की वृति ---------- २४

जैन, बौद्ध और गीता के दर्शन में कर्म का अशुभत्व, शुभत्व और शुद्धत्व ---------- २५

श्री वीर स्तवन ---------- ४२

जैन साधना का रहस्य ---------- ४३

पांच महाव्रतों की वरीयता ---------- ५१

द्वितीय खण्ड – म्हारी धरती म्हारो देश

मंगलाचरणम् ---------- १

प्रशमरतिप्रकरणकार तत्त्वार्थ सूत्र तथा भाष्य के कर्त्ता से भिन्न ---------- २

कीमती घोड़ा ---------- ८

सूर के काव्य पर अपभ्रंश कृष्ण-काव्य का प्रभाव ---------- ९

दो क्षणिकाएं ---------- १६

खारवेल का प्रारम्भिक जीवन ---------- १७

प्रभुसे विनम्र प्रश्न ---------- २६

सर्वतोभद्र प्रतिमा ---------- २७

आदमी ---------- ३०

उत्तरपुराण में प्रतिबिम्बित राजनीति ---------- ३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाहूंगा अपना अपना--४०
कुलकर और श्रमण संस्कृति --४१
सगुण भक्तों की रहस्य भावना ---५९
आत्मशांति को छू न सकेगी --६६
खण्डेलवाल श्रावकों की उत्पत्ति ---६७
तुम स्वयं महावीर हो -- ७२
जैन हरिवंश पुराणकालीन भारत की सांस्कृतिक झलक------------------------------------- ७३
संस्कृत नाट्य साहित्य में हस्तिमल्ल के नाटकों का स्थान ---------------------------------७९
एक सत्य का हाथ बहुत है ---८४
वाल्मीकि रामायण और जैन कथा-- ८५
औंकार बिन्दु संयुक्तं --८८
मुस्लिम राज्य में जैन धर्म ---८९
आत्म गीत---१००
जयपुर पोथी खाने का हिन्दी जैन साहित्य --- १०१
राघव पाटनी रचित यात्रा प्रकाश--१०७
जयपुर के जैन मेले---१०९
महावीर रा स्वर गूंजे है--११२
जयपुर की प्रथम डेढ़ शती के जैन साहित्यकार--- ११३
नारी --१२०
बुधजन सतसई -- १२१
संघी झूंताराम और उनके पूर्वज --- १२५
बालक-- १३१
दीवान झूंतारामजी और उनके वंशज---१३३
महावीर री सीख अमर रहे -- १३७
टोडरमलजी के कुछ अप्रकाशित पद ---१३९
आम्बेर संग्रहलाय की तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा ------------------------------------१४३
जैन साहित्य में प्रयुक्त धर्म परीक्षा अभिप्राय-- १४५
The Jaina Atheism ---151
धर्म, धार्मिक और धर्मालय---१६०
तृतीय खण्ड – मुक्त चिन्तन तथा अन्य
विश्वबंधुत्वस्योत्प्रेरको भगवान् महावीरः -- १
प्रीतंकर--- ३
अहसान --- ६
भगवान् महावीर प्रश्न चिन्हों के घेरे में -- ९
निबन्ध प्रतियोगिता के लेख – प्रथम--- ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबन्ध प्रतियोगिता के लेख – द्वितीय -- १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org